आरती श्री दुर्गा जी की

जग जननी जय मां जगजननी जय जय ।
भयहारिणी, भवतारिणी भवभामिनी जय जय ।।
तू ही सत्-चित्-सुखमय शुद्ध ब्रह्मस्रूपा ।
सत्य सनातन सुन्दर औ शिव सुर-भूपा ।।
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी ।
अमल अनन्त अगोचर अज आनंदराशी ।।
अविकारी, अघहारी, सकल कलाधारी ।
कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर संहारकारी ।।
तू विधि-वधु, रमा तू, उमा महामाया ।
मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी, जाया ।।
राम कृष्ण तू ही है सीता ब्रजराधा ।
तू वांच्छाकल्पद्रुम, हारिणी सब बाधा ।।
दश विद्या, नवदुर्गा, नाना शस्त्रकरा ।
अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव-स्रूप-धरा ।।
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू ।
तू श्मशान विहारिणि, ताण्डव-लासिनि तू ।।
सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या, तू शोभाकारा ।
विवसन विकट- सरूपा, प्रलयमयी धारा ।।
तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति सरलमना ।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना ।।
मूलाधार निवासिनी, इह-पर-सिद्धिप्रदे ।
कालातीता काली, कमला तू वरदे ।।

विवरण

जो भय का अंत करने वाली हैं, जो जन्म-मरण के क्रम से छुटकारा दिलाने वाली हैं ऐसे स्त्री स्रूपी सम्पूर्ण जग की माता श्री दुर्गा जी की हम जय-जयकार करते हैं । आपका ध्यान करने से हमारा मन

प्रसन्नचित हो जाता है तथा अपार सुख की अनुभूति होती है ।

ब्रह्म के रूप में भी आप ही हैं तथा परम्परागत यथार्थ के रूप में आप भगवान विष्णु की पत्नी भी हैं, भगवान शंकर की अर्द्धांगिनी पार्वती के रूप में भी आप ही हैं एवं राजा रामचन्द्र की पत्नी सीता जी के रूप में भी आप ही हैं । आरम्भ में भी आप ही हैं तथा अंत में भी आप ही हैं, आपको रोग कभी छू नहीं सकता । आपका विनाश कभी हो नहीं सकता ।

आप निर्मल मन वाली हैं, आपका कहीं अंत नहीं हैं, आपको कोई एहसास नहीं कर सकता यानि आप अप्रकट हो, आप अजन्मा हो एवं परम आनन्द की भंडार हो । आप में कहीं कोई विकार (दोष) उत्पन्न नहीं हो सकता, आप पापियों के
पाप का निवारण करने वाली हो एवं सभी कलाओं से परिपूर्ण हो ।

आप सभी विधियों को करने वाली हो, प्रभु की अर्द्धांगिनी के रूप सम्पूर्ण जग के पापों का नाश करने वाली हो । आप इस प्रकृति की देवी के रूप में हैं, दुर्गा भी आप ही हैं एवं गौरी भी आप ही हैं तथा माया के रूप में भी आप ही विद्यमान हैं। आप इस प्रकृति की जड़ हैं, विद्या के रूप में भी आप ही हैं तथा जन्म देने वाली माता के रूप में आप ही हैं ।

आप राम के रूप में भी हैं तथा कृष्ण के रूप में भी हैं, सीता भी आप ही हैं तथा ब्रज की रानी राधा के रूप में भी आप ही हैं । हमारी कल्पनाओं को पूरा करने वाली आप ही हैं तथा हमें सभी बाधाओं से मुक्त करने वाली हो । दश विद्या के
रूप में भी हो तथा नवरात्री की नवों दुर्गा भी आप ही हो ।

आपके हाथों में अनेक प्रकार के शस्त्र सुसज्जित रहते हैं आठ माताओं एवं योगिनी के रूप में आप हैं तथा नए-नए रूप धारण करती रहती हैं । आप परम धाम में निवास करने वाली हैं तथा आपका रूप अत्यन्त सुन्दर स्त्री का है, आपको नृत्य, गाने बहुत पसन्द हैं ।

आप श्मशान में विहार करने वाली हो तथा ताण्डव नृत्य भी करने वाली

हो ।
आप अपने सुन्दर एवं सौम्य रूप से देवताओं एवं मुनियों के मन को मोहित कर लेने वाली हो एवं आपके रूप की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता । आप अनेक प्रकार के कठिन रूप धारण करने वाली हो तथा प्रलय मयी हो अर्थात्
अपने इन सभी रूपों के साथ आप प्रकृति में लीन हो जाती हो ।

आप अपने अमृत रूपी स्नेह को प्रदान करने वाली हो तथा बड़े ही सहज मन वाली हो । आप रत्नों से हमेशा सजी हुई रहती हो । पेड़ में पौधे में सब में आप ही हो । आप इस संसार के आधार की जड़ हो तथा बीते हुए समय के रूप में भी आप ही हो ।

हे कोमल हृदय वाली माँ दुर्गा ! आप हमें आशीर्वाद दीजिए कि आपके चरणों में हमारा प्रेम सदा बना रहे ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.